शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'आये थे कबीर में' मानवाधिकार

सुश्री. वंदना प्रकाश पाटील
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
श्रीपतराव चौगुले आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज
मालवाडी-कोतोली
महाराष्ट्र, भारत

शोध संक्षेप

भारत का इतिहास देखने पर ज्ञात होता है कि प्राचीन काल से भारत में जाँति-पाँति, धर्म, उच्च- नीच की भावना पनपती दिखाई देती है। तत्कालीन साहित्यकारों के साहित्य में वर्णित भावना से ये बातें स्पष्ट होती हैं। अत: उन साहित्यकारों ने समाज में मानवता निर्माण करने का प्रयास किया है। इन साहित्यकारों में कबीर एक श्रेष्ठ समाजसुधारक कवि हुए वे स्वयं अनपढ थे परंतु समाज में चलती आयी रूढी-परंपराओं के प्रति उनके मन में विद्रोह की भावना निर्माण होती थी वे स्वयं किसी धर्म अथवा जाँति को माननेवाले नहीं थे अत: प्रत्येक धर्म अथवा जाँति में होनेवाली गलत रुढियों तथा परंपराओं के विरुद्ध आवाज उठाने का प्रयास किया है।

भूमिका

प्रवासी भारतीय महाकवि हरिशंकर आदेश एक श्रेष्ठ साहित्यकार हैं वे पिछले लगभग पचास साल से विदेश में रह रहे हैं, परंतु उनके मन में भारत देश के प्रति प्रेम की भावना और अधिक प्रखर होती गयी है। वे विदेश में रहकर देश की संस्कृति, साहित्य तथा महान व्यक्तियों के प्रति आदर की भावना को अभिव्यक्त करके विदेशों तक पहुँचाने का प्रयास करते रहे हैं। उनके मन में देश के प्रति होनेवाला प्रेम उनके साहित्य से स्पष्ट होता है।

श्री हरिशंकर आदेश के बारे में प्रेमचंद साहित्य के मर्मज्ञ डॉ.कमलकिशोर गोयनका 'निर्वाण' महाकाव्य की भूमिका में लिखते हैं, "उनकी हिन्दू धर्म, संस्कृति तथा अध्यात्म के साथ साहित्य, संगीत, शिक्षा तथा अन्य ज्ञान-विज्ञान में अनेक दशकों तक की गयी सेवा के इतिहास की जानकारी मिली तथा यह ज्ञात हुआ कि वे त्रिनिदाद एवं टुबैगो, कनाडा तथा अमेरिका में आदेश आश्रमों की स्थापना करके हिन्दू धर्म, संस्कृति, अध्यात्म, साहित्य, संगीत आदि के प्रचार तथा विकास के लिए महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं, जो एक बार तो स्वामी विवेकानंद की याद दिला देते हैं।

उन्होंने त्रिनिदाद, कनाडा तथा अमेरिका में रहते हुए हिन्दू धर्म, संस्कृति, अध्यात्म, संगीत तथा साहित्य के लिए जो कार्य किये हैं, यदि उनका इतिहास लिखा जाये तो विदेशों में जाकर ऐसा कार्य करने वाले भारतीयों में वे अग्रणीय व्यक्तियों में से एक होंगे। महाकवि आदेश मौन साधक हैं, अत: उन्होंने आत्मप्रचार के कार्य नहीं किये, लेकिन उनकी तीन सौ पुस्तकों तथा दशकों तक फैला उनका सांस्कृतिक एवं साहित्यिक व्यक्ति उनके महत्त्व और योगदान से हमें चमत्कृत करता है।1 आदेश जी विश्व नागरिक के रूप में भारतीय संस्कृति के प्रबल पोषक हैं।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

वे पश्चिमी जगत में भारतीय दर्शन की निरंतर व्याख्या कर रहे हैं।

'आये थे कबीर' में मानवाधिकार

कवि हरिशंकर आदेश द्वारा लिखित 'लहु और सिन्दूर' कविता संग्रह में संकलित कविता 'आये थे कबीर' कविता में कवि कबीर के विचारों के आधार पर समाज में चली रुढि - परंपरा तथा नष्ट हो रही मानवता को स्पष्ट करते हैं इस कविता के हर शब्द में मानव के अधिकार तथा कर्तव्यों का दर्शन होता है।

कवि आदेश जी को कबीर के समय जो अनिष्ट रुढि-परंपराएँ समाज में थी वहीं वर्तमानकाल में दिखाई देती है। तब उनके मन में कबीर के बारें में विचार आते हैं कवि आदेश भी भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता को बढाना चाहते हैं परंतु उसी समय लोगों के मन से नष्ट हो रही मानवता की भावना के कारण उनका मन उदास हो उठता है और समाज में मानवता निर्माण करने चाहते हैं।

कबीर के हर पद में मानवाधिकार दिखाई देता है। कबीर ने अपने पदों में स्वातंत्र, समता बंधुता इन मूल अधिकारों को अभिव्यक्त किया है साथ ही कबीर के रुढि - परंपरा, जाँति-पाँति, धर्मभेद शोषक-शोषित आदि विचारों को आज भी समाज के सामने रखने की आवश्यकता लगी है। भारतीय संविधान में 1 से 30 अनुच्छेदों के अनुसार मानव के अधिकार बताये गये हैं। परंतु प्रत्यक्ष रूप में उनका उपयोग समाज में किया नहीं जाता है। ऐसे समाज को अपने अधिकार तथा हक्क के प्रति सजगता निर्माण करने का काम अनेक साहित्यकारों ने किया है।

'आये थे कबीर' कविता में कवि प्रो. हरिशंकर आदेश जी कबीर के कार्य के प्रति कृतज्ञता तथा उनका उद्देश्य स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि कबीर इस जगत में केवल समाज को सही राह पर लाने के लिए आये थे। आदेश जी कहते हैं :

'भटकों को राह दिखाने को दुनिया में आये थे कबीर [1]

कबीर के समय की राजनीतिक तथा सामाजिक परिस्थिति बहुत ही बिगडी हुई थी। समाज में एकता की भावना नहीं रही थी ऐसे समाज को सुखी बनाने के लिए कबीर आये थे :

'जब जाँति- पाँति का अंधियारा खाये जाता था जग सारा
डर-डर कर जिससे सिहर रहा था, ज्ञान दीप का उजियारा
फिर बुझती ज्योति जलाने को समभाव सभी में लाने को
जन-जीवन सुखी बनाने को दुनिया में आये थे कबीर'[2]

समाज में लोगों के मन में संकुचित वृत्ति बढ गयी थी सभी लोग अपने-अपने धर्म को चिपककर बैठे थे और उसी कारण समाज में एकता बंधुता दिखाई नहीं दे रही थी ऐसे समाज में एकता निर्माण करने के लिए कबीर ने अनेक पदों की रचना की थी. भारतीय संविधान के 1 से 3 अनुच्छेद में जाँति-पाँति का भेदभाव न रखने के बारे में तथा बंधुता की भावना रखने के बारे में बताया गया है :

मौलवी- शास्त्री, मुल्ला- पंडित, जब आपस में लडते थे
थे मर्म धर्म का भूल रहे, बिन बात सदैव झगड़ते थे
दोनों का भेद मिटाने को हृद्यों में प्रेम बढाने को
सच का रहस्य बतलाने को दुनिया में आये थे कबीर'[3]

कबीर ने अपने पदों में किसी भी धर्म को श्रेष्ठ या कनिष्ठ नहीं माना है। उनका कहना है कि

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कोई भी धर्म हो उसमें जो बात कहीं गयी है। उस बात को समझ लेना महत्त्व की बात है। कोई भी धर्म लडने झगडने को नहीं कहता बल्कि सभी मानव एक है और मानवता यहीं एक धर्म है ऐसा बताकर समाज में मानवता का निर्माण करना चाहते हैं। भारतीय संविधान के 18 अनुच्छेद में धर्मनिरपेक्षता के बारे में तथा मानवता के बारे में बताया गया आदेश जी इसी बात को आगे बढाकर आज समाज में धर्म के नाम पर हो रहे दंगे-फसाद को नष्ट करना चाहते हैं। भारत को धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र कहा जाता है परंतु प्रत्येक व्यक्ति अपने अपने धर्म को उच्च मानते हुए दूसरे धर्म को निम्न मानते हैं। इसलिए कबीर पूछते हैं कि सभी मानव का खून लाल है, शरीर की रचना एक जैसी है जन्म के साथ किसी भी मानव के साथ किसी भी धर्म का नाम जोडकर नहीं आता है फिर भी मानव किसी एक धर्म को साथ लेकर जीवन व्यतीत करता है मानव धर्म के नाम पर अपने स्वार्थी विचारों को पास लेकर जीवन बिताते हैं, परंतु उससे समाज में असंतोष की भावना फैल जाती है। अत: कबीर सभी लोगों को समानता से, नैतिकता से रहने की सलाह देते हैं :

'मानवता का आदेश दिया, पाखंड-खंड कर दिखलाया
सीधे-सीधे से शब्दों में, वेदांत उपनिषद समझाया
हर मुश्किल सरल बनाने को, सबको ही हृदय लगाने को
मृदु गीत तान के गाने को, दुनिया में आये थे कबीर'[4]

कबीर समाज को मानवता का संदेश देते हैं । कबीर समाज में धर्म के नाम पर पाखंड मचाया जाता है। उसका खंडन करते हैं। लोगों को मानवता के विचार सरल, स्पष्ट और सीधे शब्दों में समझाते हैं। भारतीय संविधान में 1 से 3 अनुच्छेद में सर्वधर्मसमभाव, बंधुत्व की भावना, प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्म के अनुसार रहने का अधिकार, विचार स्वातंत्र आदि के बारे में जानकारी दी है।

निष्कर्ष

प्रो. आदेश जी अपनी इस कविता के माध्यम से कबीर के साहित्य की महानता हमारे सामने व्यक्त करते हैं। साथ ही समाज में लोगों को अपने अधिकार तथा कर्तव्यों के बारे में सजग करना चाहते हैं। कबीर ने अपने समय में जब जाँति-पाँति की भावना समाज में पूरी तरह पनप गयी थी उसके विरोध में कोई बोल भी नहीं सकता था ऐसे समय कबीर अपने तीखे शब्दों में प्रहार करते हैं। वही विचार प्रो. आदेश जी फिर से रखते हैं और समाज में मानवाधिकार के प्रति जागृति निर्माण करने का प्रयास करते हैं।

सन्दर्भ

1 निर्वाण, हरिशंकर आदेश, भूमिका : डॉ.कमलकिशोर गोयनका, 27, नटराज प्रकाशन, अशोक विहार, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2008
2 प्रो. हरिशंकर आदेश - 'लहू और सिंदूर' जीवन ज्योति प्रकाशन, त्रिनिदाद : प्रकाशन -2001 संदर्भ क्र.1,2,3,4, पृष्ठ 47
3 प्रो. हरिशंकर आदेश, समग्र साहित्य सूची तथा साहित्य